टीएनबी कॉलेज में आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में बोले शिवाजी विवि के प्रो यादव

मनुष्यों को बचाने के लिए पौधों को बचाना जरूरी

टीएनबी कॉलेज में पुस्तक का विमोचन करते कुलपति प्रो आरएस दुबे, प्रोवीसी प्रो एके राय व अन्य एवं मौके पर उपस्थित शिक्षक व छात्र-छात्राएं. ■ फोटो। प्रभात खबर

वरीय संवाददाता भागलपुर

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के वनस्पति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो एसआर यादव ने कहा कि मानव अस्तित्व को बचाने के लिए पौधों को बचाना जरूरी है. धरती पर अब तक 1.7 मीलियन के लगभग पौधों का वर्गीकरण हो चुका है. फिर भी अनगिनत पौधे बचे हुए हैं, जिन तक वैज्ञानिकों की पहुंच नहीं हो सकी है. इसके लिए वनस्पति विज्ञान में अत्यधिक शोध की आवश्यकता है. प्रो यादव शुक्रवार को टीएनबी कॉलेज में शुरू हुई आठ दिनों की कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे. कार्यशाला का विषय पौधा वर्गीकरण में क्षमता विकास का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम है.

कार्यशाला का आयोजन टीएनबी कॉलेज के वनस्पति विज्ञान विभाग, टीएमबीयू के पीजी

इंटरनेट के माध्यम से पौधे की तसवीर लेकर शोध कर रहे छात्र : प्रो केएलबी सिंह

वनस्पति विज्ञान विभाग, बॉटनिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया की ओर से किया गया था. कार्यशाला की अध्यक्षता तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो रमा शंकर दुबे ने की. कार्यशाला का उद्घाटन भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, कोलकाता के निदेशक डॉ परमजीत सिंह, टीएमबीयू के कुलपति प्रो दुबे, प्रतिकुलपति प्रो एके राय, टीएमबीयू के विज्ञान के डीन प्रो केएलबी सिंह, शिवाजी विवि के प्रो एसआर यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ पी लक्ष्मीनरसिम्हन, पीजी बॉटनी के अध्यक्ष प्रो एके सिंह ने किया. टीएनबी कॉलेज के प्राचार्य डॉ डीएन झा ने

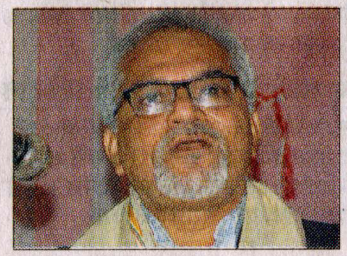

संबोधित करते प्रो परमजीत सिंह.

अतिथियों का स्वागत किया.

भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, कोलकाता के निदेशक डॉ परमजीत सिंह ने पादप वर्गीकरण में अपने संस्थान की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया. उन्होंने कहा कि मनुष्यों में जन्म के साथ ही वर्गीकरण का रिश्ता हो जाता है. तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय के विज्ञान के डीन प्रो केएलबी सिंह ने कहा कि पौधे खतरे में हैं, तो जीव भी खतरे में हैं. उन्होंने आज के दौर में इंटरनेट के भरोसे किये जानेवाले शोध की जम कर मुखालफत की. उन्होंने कई शोधार्थियों द्वारा शोध के लिए तैयार किये गये पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन में सुंदर-सुंदर पौधे संलग्न किये हुए देखा है. शोधार्थियों को यह पूछने पर कि क्या उन्होंने इन पौधों को देखा है, तो वे यह बताते हैं कि आज कल तो यह इंटरनेट पर आसानी से मिल जाता है. यह बहुत ही दुख की बात है कि जिन पौधों को छात्र देखा नहीं है, उस पर वे शोध कर लेते हैं. पादप वर्गीकरण के लिए फील्ड स्टडी बेहद जरूरी है. कम से कम टीएमबीयू के पीजी बॉटनी विभाग के गार्डन में छात्र अवश्य जाएं और पौधों को पहचाने. इससे पूर्व आयोजन सचिव डॉ हीरेंद्र कुमार चौरसिया ने विषय प्रवेश कराया. डॉ मनोज कुमार ने संचालन किया.